विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

सड़क दुर्घटनाएं

यातायात मार्गों पर अराजकता की स्थिति राजस्थान में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए परिवहन विभाग ने अपना नाम परिवहन विभाग और सड़क सुरक्षा जरूर रख लिया है मगर प्रदेश में आये दिन सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ लगातार बढ़ता ही जा रहा है। राजस्थान में प्रति वर्ष तीस हजार से अधिक सड़क दुर्घटनाएं हो रही है जिनमें युवा सर्वाधिक शिकार हो रहे हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में इन दिनों सड़क हादसों के बादल मंडरा रहे है। प्रदेश की राजधानी हादसों का मुख्य केंद्र बनी हुई है। सड़क हादसों में जयपुर पूरे भारत में अग्रणी है। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक प्रतिदिन इसकी चपेट में आ रहे हैं। यातायात मार्गों पर अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। दो पहिया हो या चार पहिया किसी को भी जिंदगी की परवाह नहीं है। एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है। यातायात नियमों की सरेआम धज्जियाँ उड़ रही है। नियमों की पालना नहीं होने से दुर्घटनाओं के अम्बार लग रहे है। सड़क दुर्घटनाओं से अखबार भरे रहते हैं।

राजधानी के यातायात मार्ग तो जाने-अनजाने मौत के मार्ग बन गये हैं। सबसे बुरी स्थिति टोंक रोड पर बी-2 बाईपास, शिवदासपुरा, पावटा, जे.एल.एन. मार्ग पर ओ.टी.एस. चैराहा, जगतपुरा पुलिया, झालाना मार्ग, अजमेर रोड, न्यू सांगानेर रोड, सिरसी रोड, भांकरोटा, राजापार्क में गोविन्द मार्ग, अजमेरी गेट, विश्वविद्यालय मार्ग, घाट की गुणी की आदि की है।

प्रदेश में सड़कों की बदहाल स्थिति में अतिक्रमण, अवैध कब्जों और यातायात की बिगड़ी व्यवस्था ने कोढ़ में खाज का काम किया है। विशेष कर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में सड़कें अतिक्रमण के कारण सिकुड़ कर रह गई हैं। राजधानी जयपुर सहित इस समय प्रदेश के सभी मेट्रो सिटी यातायात की सुचारू व्यवस्था नहीं होने से आम आदमी परेशानी को झेल रहा है। राजधानी में परकोटे की स्थिति सबसे खराब है। परकोटे के मुख्य बाजारों किशनपोल, त्रिपोलिया, जौहरी बाजार, रामगंज बाजार, छोटी-बड़ी चैपड़ की स्थिति किसी से छिपी नहीं है।

वाहनों के बढ़ जाने के कारण और सड़कों पर अतिक्रमण के फलस्वरूप यहाँ ट्रैफिक की व्यवस्था बुरी तरह बिगड़ गई है। अतिक्रमण और अवैध कब्जों ने इन बाजारों की शांति का जैसे किसी ने हरण कर लिया है। ऑपरेशन पिंक के दौरान अवैध कब्जे और अतिक्रमण को हटाकर आम नागरिक को राहत दी गई थी मगर अब फिर से अतिक्रमण की पुरानी स्थिति बहाल होने से आम आदमी आहत है। एक बार फिर राजधानी अतिक्रमणकारियों के कब्जे में है। लोग चार पहिया वाहन लेकर जाने में डरने लगे हैं।

जानलेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे। नगर निकायों और एजेन्सियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिये। घटिया निर्माण पर तुरन्त कार्यवाही हो।

सड़क दुर्घटनाओं के ग्राफ में तेजी से वृद्धि हो रही है। सड़क दुर्घटनाओं से अखबार भरे रहते हैं। दुर्घटनाओं में मौतें और घायल होने के समाचार प्रतिदिन पढ़ने और देखने को मिल रहे हैं। भारत में सबसे अधिक लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं। भारत में हर साल लगभग 1.4 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जबकि लाखों की संख्या में लोग घायल हो जाते हैं और हजारों जीवन भर के लिए विकलांग भी हो जाते हैं। इन दुर्घटनओं में होने वाली मौतों में 33 प्रतिशत 15 से 24 साल के आयु वर्ग के युवा हैं।

सड़क हादसों के मामलों में राजस्थान का देश में आठवां तथा इन हादसों में मरने वालों की संख्या के लिहाज से पांचवें स्थान पर है। देश में सड़क हादसों में रोजाना 415 लोगों की जान जाती है। हर साल 4.50 करोड़ सड़क हादसे होते हैं। इनमें डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती है और साढ़े चार लाख लोग घायल होते हैं। जानकारों का कहना है सड़क हादसों में होने वाली मौतों की तादाद सरकारी आंकड़ों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। दूर-दराज के इलाकों में होने वाले हादसों की अक्सर खबर ही नहीं मिलती। देश में लॉकडाउन के दौरान सड़क हादसों में रिकॉर्ड कमी दर्ज की गई थी, पर अनलॉक के बाद से दोबारा सड़क हादसों में तेजी आ गई है।

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, आम जनता में खासतौर से नये आयु वर्ग के लोगों में अधिक जागरुकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरुकता आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा गया है। सड़क दुर्घटना, चोट और मृत्यु आज के दिनों में बहुत आम हो चला है। सड़क पर ऐसी दुर्घटनाओं की मुख्य वजह लोगों द्वारा सड़क यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा उपायों की अनदेखी है।

गलत दिशा में गाड़ी चलाना, सड़क सुरक्षा नियमों और उपायों में कमी, तेज गति, नशे में गाड़ी चलाने आदि। सड़क हादसों की संख्या को घटाने के लिये उनकी सुरक्षा के लिये सभी सड़क का इस्तेमाल करने वालों के लिये सरकार ने विभिन्न प्रकार के सड़क यातायात और सड़क सुरक्षा नियम बनाये हैं। हमें उन सभी नियमों और नियंत्रकों का पालन करना चाहिये जैसे रक्षात्मक चालन की क्रिया, सुरक्षा उपायों का इस्तेमाल, गति सीमा को ठीक बनायें रखना, सड़क पर बने निशानों को समझना आदि।

जानलेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे। नगर निकायों और एजेन्सियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिये। घटिया निर्माण पर तुरन्त कार्यवाही हो तथा यातायात और ट्रैफिक की वर्तमान स्थिति में जनभावनाओं के अनुरूप सुधार हो। आम आदमी को राहत प्रदान करने के लिए निर्माण कार्यों में पारदर्शिता का होना अत्यावश्यक है।

–अतिथि संपादक
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 20 जनवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, अश्लेषा नक्षत्र प्रातः 8:24 तक, आयुष्मान योग दिन 3:44 तक, गर करण प्रातः 8:05 तक, चन्द्रमा आज 8:24 पर सिंह राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज भद्रा रात्रि 8:48 से शुक्रवार प्रातः 8:52 तक रहेगी। सायन कुम्भ में शनि प्रवेश प्रातः 8:09 पर करेगा। आज द्वितीया तिथि की वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:18 से 12:38 तक, लाभ-अमृत 12:38 से 3:16 तक, शुभ 4:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:55

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों के सहयोग मिल सकता है।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यक्तिगत व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

सामाजिक न्याय प्राप्ति में बाधाऐं

भारत में सामाजिक न्याय की अवधारणा पर पिछले कुछ वर्षों से मंडरा रहे खतरों ने चिन्तित कर रखा है। ये खतरे सामाजिक न्याय के विरोधियों की ओर से भी हैं और आंतरिक भी हैं। सबसे बड़ा खतरा इस अवधारणा के संकुचन का है। सामाजिक न्याय का अर्थ उन सभी व्यक्तियों को जाति, नस्ल, रंग, लिंग, धर्म आदि भिन्नताओं के कारणों से शक्ति के स्त्रोतों अर्थात आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक आदि से दूर धकेले गये तबकों को न्याय उपलब्ध करवाना है, जिन्हें किसी भी प्रकार के वर्चस्व के कारण अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। सामाजिक न्याय अपने मूल रूप में विशेषाधिकार आधारित योग्यतावाद के विरुद्ध एक निरन्तर संघर्ष है। जीवन के हर क्षेत्र में सभी को समान अवसर की उपलब्धता के लिए संघर्ष व सामाजिक विविधता का सिद्धान्त-इस संघर्ष के अस्त्र-शस्त्र हैं। सामाजिक न्याय का अर्थ आज लोग वंचित तबकों को राजनीति में आरक्षण से चुनाव जीत लेना एवं सरकारी व निजी क्षेत्रों की नौकरियों में आरक्षण से लगाते हैं। इसे ही सामाजिक न्याय की लड़ाई का अन्तिम छोर मानते हैं।

सामाजिक न्याय का सपना तो सभी प्रकार के भेदभाव से रहित समाज का सपना है। इस अर्थ में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, सन्त कबीर एवं काल-मार्क्स की भावनाओं का विस्तार है। किन्तु भारतीय समाज की वर्चस्ववादी शक्तियाँ चाहती हैं कि यह लड़ाई इसी संकुचित रूप में सिमटी रहे और उनके अधीन विभिन्न प्रकोष्टों में चलती रहे। भारत में सामाजिक न्याय का संघर्ष मुख्य रूप से द्विजों और शूद्रों-अतिशूद्रों व आदिवासियों के बीच है। जिसमें द्विज अल्पसंख्यक है, जबकि शूद्र-अतिशूद्र आदिवासी बहुसंख्यक हैं। राजनीतिक पार्टियाँ अपने संगठन में ओबीसी प्रकोष्ठ, दलित-प्रकोष्ठ, आदिवासी प्रकोष्ठ आदि रखती हैं। यह बहुजन तबकों के संघर्ष को प्रकोष्ठों में बन्द करने का तरीका है। जब बहुजन समुदाय उनके प्रकोष्ठों में बन्द हो जाते हैं, तो स्वतः ही अल्पसंख्यक द्विज भारतीय राजनीति की मुख्यधारा बन जाते हैं।

बहुजन शब्द 'बुद्ध' के सूत्र वाक्यक 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' से आया है। इसका अर्थ है, अधिकतम लोगों के हित के लिए हो। कोई किसी पर वर्चस्व स्थापित ना करे। जबकि बहुसंख्यकवाद का अर्थ है, बहुसंख्यक लोगों का अल्प संख्यकों पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक वर्चस्व व उनकी संस्कृति का हरण। हिन्दुत्व की राजनीति अपने मूल रूप में यही करने की कोशिश करती है। हालांकि हिन्दुस्तान में वास्तव में हिन्दुत्ववाद से अधिक मजबूत ब्राह्मणवाद की राजनीति रही है। जो कि वास्तव में अल्पसंख्यकवाद है, ना कि बहुसंख्यकवाद। सामाजिक न्याय की अवधारणा में हमें दोनों अतियों से बचना होगा। इसे उस अंतिम समुदाय और अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचाना होगा जिसे किसी कारण से वंचना झेलनी पड़ी है।

विश्व के सबसे अमीर लोगों की सूची में भारतीयों की संख्या निरन्तर बढती जा रही है जो कई वर्षों से अखबारों एवं मीडिया की सुर्खिया बन रही हैं। किन्तु भारत के अमीर लोगों की सूची में ना कोई ओबीसी है, ना कोई दलित है, ना कोई आदिवासी है और ना ही कोई मुसलमान। दलित चैम्बर ऑफ कॉमर्स (डिक्की) के उद्योगपतियों की हैसियत इनकी तुलना में कुछ भी नहीं है। वहां तो वे पहाड़ के नीचे खड़े ऊंट की तरह ही दिखेंगे। बहुजन समुदाय के पास इतनी राजनीतिक जीतों के बावजूद भी किसी व्यक्ति के पास कोई अखबार या टी.वी. चैनल नहीं है जिसे 'मुख्यधारा' कहा जा सके। इस बड़े सवाल का उत्तर है कि बहुजन समाज के किसी व्यक्ति की इतनी हैसियत नहीं है, जिससे 'मुख्यधारा' के अखबारों व टी.वी. चैनलों का मुकाबला कर सकें। फिलहाल इस मामले में हमें भारत में 'बहुजन डायवर्सिटी मिशन' के संस्थापक एच.एल. दुषाद से सहमत होना होगा कि सत्ता के सभी केन्द्रों और सभी प्रकार के संसाधनों के मालिकाना हक में सामाजिक विविधता ही सामाजिक न्याय का कारगर उपाय है। आरक्षण उस दिशा में चलने के लिये जरूरी शुरूआती कदम है। लेकिन जरूरत यह है कि हम पहली मंजिल पर ही ना रुक जावें बल्कि आगे के रास्तों पर भी नजर रखें।

सामाजिक न्याय प्राप्ति की त्रासदी के रूप में देश में वर्ण व्यवस्था द्वारा भारतीय समाज सदियों से परिचालित होता रहा है। वह व्यवस्था दुनिया की सर्वाधिक अन्यायकारी व्यवस्था है और इसी के कारण देश में सामाजिक अन्याय का सबसे शर्मनाक अध्याय लिखा गया है। शक्ति के स्त्रोंतों के असमान बंटवारे की नीति दूरगामी उद्देश्य से विदेशी मूल के मनीषियों (आर्यों) द्वारा जारी रखी। इसमें अध्ययन-अध्यापन, पौरोहित्य, राज्य संचालन, सैन्य वृत्ति, व्यवसाय एवं वाणिज्यिक इत्यादि के अधिकार सिर्फ द्विज वर्ग के अधिकार में रहे। चूंकि इसमें वर्ण एवं जाति व्यवस्था की कठोरता थी। इसीलिए सारे पेशे कर्म/जाति/वर्ण-सूत्र से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। इसी से वर्ण व्यवस्था ने एक आरक्षण व्यवस्था का

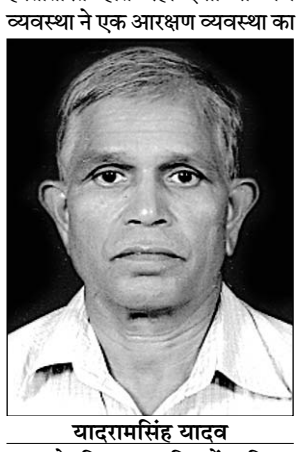

यादरामसिंह यादव

रूप ले लिया था जिसमें दलित-आदिवासी-पिछडे और महिलाओं को शक्ति के सभी स्त्रोतों से पूरी तरह बहिष्कृत करके चिरकाल के लिए पंगु बना दिया गया। जिनके लिए आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व शैक्षणिक गतिविधियाँ, धर्म आधारित विद्वानों से पूरी तरह निषिद्ध थी। यही नहीं लोग उनकी छाया तक से दूर रहते थे, ऐसी स्थिति दुनिया के किसी भी मानव समुदाय की कभी नहीं रही। बाबा साहब अम्बेड़कर द्वारा संविधान में लागू किया गया आरक्षण और कुछ नहीं बल्कि जाति, नस्ल, रंग, लिंग व धर्म आदि के भेदभाव के कारण शक्ति के स्त्रोतों से जबरन वंचित किये गये लोगों को कानून की ताकत से शक्ति के स्त्रोतों पर हक दिलाने का अचूक औजार है जो परिवर्तीकाल में दलित-पिछड़ों को सामाजिक अन्याय से उबारने में काफी कारगर सिद्ध हुआ। जिन दलितों के लिए स्कूल की पढाई करने का कल्पना करना दुष्कर था वे झुण्ड के झुण्ड विधायक, सांसद, कलेक्टर, एस.पी., एस.डी.एम., डॉक्टर, इंजीनियर व न्यायाधीश आदि बनकर देश की मुख्यधारा से जुडने लगे हैं।

अम्बेडकरी आरक्षण का प्रयोग, अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मलेशिया व आयरलैण्ड ने अपने देशों के जन्मजात वंचितों को शक्ति के स्त्रोतों में उनकी वाजिब हिस्सेदारी देने के लिए किया। जिससे दुनिया के वंचितों को वाजिब हिस्सेदारी मिलने से चमत्कारिक परिवर्तन आया। इसके आधार पर डॉ. अम्बेडकर को सामाजिक न्याय का चैम्पियन कहा जाता है। बहरहाल संविधान द्वारा सामाजिक अन्याय के शिकार बनाये गये लोगों के हित में तरह-तरह के प्रावधान किये जाने से कुछ लोगों के जीवन में चमत्कारिक सुधार जरूर आया है। किन्तु शक्ति के स्त्रोतों पर उनका हक नाम मात्र का ही प्राप्त हुआ है। राजनीति में भले ही हिस्सेदारी हो, किन्तु व्यापार, उद्योग, मीडिया, उच्च शिक्षा आदि से आद भी पूरी तरह बहिष्कृत हैं। आज भी देश के 8-10 प्रतिशत उच्च वर्ण के परम्परागत, विशेषाधिकार युक्त, सुविधा सम्पन्न वर्ग का शक्ति के स्त्रोतों पर 80-85 प्रतिशत कब्जा है। इस कारण आर्थिक और सामाजिक गैरबराबरी जो मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या है जो भारत में अभी भी कायम है।

इस विषय में क्रेडिट सुईसे एजेन्सी की वैश्विक धन बंटवार की जारी छंटवीं रिपोर्ट में लिखा है कि सामाजिक आर्थिक न्याय के सरकारों के तमाम दावों के बावजूद भारत में आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक 2000-2015 के बीच पन्द्रह वर्षों में जो कुल राष्ट्रीय धन पैदा हुआ उसका 81 प्रतिशत शीर्ष की दस फीसदी आबादी विशेषाधिकार युक्त वर्ग के पास गया, शेष 19 प्रतिशत धन 90 फीसदी जनता के पास आया। जिसमें नीचे की आधी 50 प्रतिशत आबादी के पास 4.1 प्रतिशत ही धन आया है। गैर बराबरी अक्सर समाज में राजनीतिक उथल-पुथल की वजह से बनती है। सरकार एवं राजनीतिक पार्टियों को इस समस्या को गंभीरता से लेना चाहिए। यह सवाल सर्वाधिक महत्व का हो गया है कि स्वाधीन भारत में आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक न्याय के विविध उपायों के बावजूद भी सामाजिक अन्याय की धारा आज भी पूर्ववत जारी है। समाज में असहिष्णुता तथा दलित वंचितों, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं आत्महत्या करने के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। बेरोजगारी सिरसा के मुँह की तरह बढ़ती जा रही है।

इसके लिए बेहतर होगा कि आर्थिक, सामाजिक गैर बराबरी को सबसे गम्भीर समस्या मानते हुए हम सारी ताकत, शक्ति के स्त्रोतों के पुनर्वितरण पर लगायें। दुनिया के अनेक महापुरूषों ने इसी को इंसानियत की सबसे बड़ी समस्या बताया है। बाबा साहब अम्बेडकर ने भी संविधान सभा द्वारा स्वीकार करते समय 25 नवम्बर, 1949 को आर्थिक और सामाजिक विषमता को राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या बताते हुए उसे शीघ्र से शीघ्र समाप्त करने का आह्वान किया था। सामाजिक न्याय प्राप्ति के रास्ते पर आर्थिक व सामाजिक विषमता को समाप्त करने में परम्परागत व्यवस्थाऐं सबसे बड़ी बाधा हैं, उनको समाप्त किये बिना सामाजिक न्याय प्राप्ति का सपना अधूरा रहेगा। दुनिया के तमाम शासक शक्ति के स्त्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का असमान वितरण कराके मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या को जन्म देते रहे हैं। ऐसे में यदि सामाजिक अन्याय को खत्म कर सामाजिक समूहों सवर्णों, ओबीसी/ एससी/एसटी और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लोगों की जनसंख्या के अनुपात में बंटवारा करना चाहिए।

यदि सरकारें इसे नहीं माने एवं लागू नहीं करें तब पूना पैक्ट में 24 सितम्बर, 1932 के दिन दलित-वंचितों से छीने गये पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया जावे तभी हम वैधानिक रूप से अपनी जनसंख्या के अनुपात में आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक क्षेत्रों में संसाधनों का बंटवारा हासिल कर सकते हैं। अन्यथा तो देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को शक्ति के स्त्रोतों से वंचित वर्ग मजबूर होकर धराशाही कर सकते हैं।

–यादरामसिंह यादव,
अधिवक्ता एवं लेखक

सवाई माधोपुर शहर का 259वां स्थापना दिवस करोना गाइडलाइन की पालना करते हुए मनाया

सवाई माधोपुर, (निसं)। सवाई माधोपुर शहर का 259वां स्थापना दिवस कोरोना गाइडलाइन की पूर्ण पालना करते हुए उल्लास के साथ मनाया। स्थापना दिवस के तहत सवाई माधोपुर उत्सव के रूप में दो दिवसीय कार्यक्रमों का आगाज बुधवार को हुआ। उल्लेखनीय है कि 19 जनवरी, 1763 को सवाई माधोपुर शहर का निर्माण शुरू किया गया था।

सवाई माधोपुर उत्सव के तहत रणथंभौर किला स्थित त्रिनेत्र गणेश मंदिर में नगर परिषद सभापति विमलचन्द महावर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. सूरज सिंह नेगी, एसडीएम कपिल शर्मा, सहायक निदेशक पर्यटन मधुसूदन सिंह सहित अन्य अधिकारियों ने त्रिनेत्र गणेश की महाआरती कर सवाई माधोपुर एवं प्रदेश की जनता की खुशहाली की प्रार्थना की।

इसके बाद सुबह 11 बजे नगर परिषद परिसर में सवाई माधोपुर के संस्थापक महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम की प्रतिमा पर जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला, नगर परिषद सभापति विमलचन्द महावर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. सूरज सिंह नेगी, सवाई माधोपुर एसडीएम कपिल शर्मा, नगर परिषद आयुक्त नवीन भारद्वाज सहित अन्य अधिकारियों एवं जन प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि कर सवाई माधोपुर के संस्थापक को नमन किया।

इस मौके पर जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला ने सवाई माधोपुर को और अधिक स्वच्छ एवं सुंदर शहर बनाने के लिये मिलकर काम करने की बात कही। उन्होंने कहा कि सभी मिलकर सवाई माधोपुर के विकास के लिए कार्य करेंगे।

- **सवाई माधोपुर संस्थापक सवाई माधोसिंह प्रथम की प्रतिमा का माल्यार्पण किया, त्रिनेत्र गणेश की हुई महाआरती**
- **अधिकारियों ने त्रिनेत्र गणेश की आरती कर सवाई माधोपुर एवं प्रदेश व जनता की खुशहाली की प्रार्थना की**

उन्होंने कहा कि कोरोना गाइडलाइन के चलते इस बार सवाई माधोपुर उत्सव को सादगी से मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला ने सवाई माधोपुर के विकास के लिए उनके मन में चल रहे प्लान को साझा करते हुए सुंदर एवं स्वच्छ शहर की परिकल्पना को सबके सहयोग से मिलकर साकार करने की बात कही।

नगर परिषद परिसर में सवाई माधोपुर के संस्थापक महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम की प्रतिमा पर नमन किया।

इस मौके पर विभिन्न विभागों के अधिकारी, पार्षदगण एवं आमजन मौजूद रहे। सभी वक्ताओं ने मिलकर सवाई माधोपुर को आदर्श, स्वच्छ एवं हरित शहर बनाने की दिशा में कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। अगले सवाईमाधोपुर महोत्सव की कडी में 20 जनवरी, गुरूवार को सुबह 11 बजे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाई माधोपुर में सवाई माधोपुर अतीत से वर्तमान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन होगा।

अलवर के रियासतकालीन राज.मुद्रणालय को बंद करने के आदेश जारी

अलवर, (निसं)। कर्मचारियों के व्यापक विरोध के बावजूद अलवर का रियासतकालीन राजकीय मुद्रणालय आखिर बंद हो रहा है।

राजकीय मुद्रणालय को बंद करने के आदेश 17 जनवरी को मुद्रण एवं लेखन सामग्री निदेशक असलम शेर खान ने जारी किए।

आदेश में लिखा है कि 20 जनवरी को अलवर मुद्रणालय में अंतिम कार्य दिवस होगा।

ये आदेश आने के बाद मुद्रणालय के कर्मचारियों में निराशा एवं आक्रोश का माहौल है। राजकीय मुद्रणालय में वर्तमान में 21 कर्मचारियों का स्टाफ है। विभाग ने उनसे प्रतिनियुक्ति के विकल्प मांगे हैं। अधिकांश कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति में 2 से 3 वर्ष बाकी हैं।

इंटरनेशनल पैरा कबड्डी में दमखम दिखाएगा फिजिकल डिसएबल्ड भगवानाराम

श्रीगंगानगर, (नि.सं.) जिले के रायसिंहनगर इलाके के गांव दस टीके के भगवानाराम मेघवाल ने हिम्मत और हौसले के दम पर फिजिकल डिसएबिलिटी को हराकर कामयाबी की मिसाल कायम की है। भगवानाराम का एक हाथ कटा हुआ है, इसके बावजूद वह बेहद तेजी से कबडडी में सामने वालों के छक्के छुड़ा देता है। कई खिलाड़ियों को आउट करता है और विरोधी रेड डालने आएं तो उन्हें टैकल भी शानदार तरीके से करता है।

भगवानाराम जन्मजात हैंडीकैप नहीं था। करीब सात साल पहले 2015 में गांव की गौशाला में चारा काटने के दौरान वह मशीन की चपेट आया और उसका एक हाथ कट गया। तब वह सातवीं क्लास का स्टूडेंट था। उसने हिम्मत नहीं हारी। दायां हाथ कटा तो बाएं हाथ से लिखने का अभ्यास शुरू कर दिया और लिखकर सातवीं कक्षा पास की। इसके बाद वह लगातार आगे की कक्षाओं में पास होता चला गया। हादसे के बाद भगवानाराम की हिम्मत और हौसला देखकर उसके टीचर्स ने उसे मोटिवेट किया और उसे खेल की तरफ बढ़ ने की राह दिखाई। पीटीआई लक्ष्मण ने उसे आगे बढ़ ने का तरीका बताया और पैरा गेम्स के लिए तैयार करने को कहा। अब भगवानाराम के सामने दो विकल्प थे। भगवानाराम कबड्डी का अच्छा खिलाड़ी तो था ही वह दौड़ने में भी तेज था। दोनों खेलों में अभ्यास करता और अंततः उसने पैरा खेलों के लिए कबड्डी को चुना।

श्रीगंगानगर में पैरा कबडडी के लिए चयन ट्रायल हुआ तो भगवानाराम उत्साह से खेला। वह शुरुआत से ही समान्य स्टूडेंट्स के साथ खेलता था। ऐसे में पैरा मुकाबले में अन्य खिलाड़ियों से ज्यादा दिव्यांग होने के बावजूद उसका प्रदर्शन शानदार रहा और स्टेट टीम में चयन हुआ। हाल ही पुष्कर में स्पोर्ट्स बोर्ड ऑफ इंडिया फॉर द डिसएबल्ड की ओर से हुई राष्ट्रीय दिव्यांग कबड्डी प्रतियोगिता में राजस्थान स्टेट की टीम को सर्वाधिक अंक दिलाकर विजेता बनाया। इसी के आधार पर भगवानाराम का सलेक्शन थाइलैंड में होने वाली इंटरनेशनल पैरा कबड्डी प्रतियोगिता के लिए हुआ है। यह इंटरनेशनल कबड्डी मुकाबला अगले साल होगा। भगवानाराम ने बताया कि उसे अभी बारह सदस्यों वाली टीम में चुने जाने और तैयारी जारी रखने की सूचना दी गई है। उसने बताया कि साल 2015 में हादसे के बाद तो उसकी हिम्मत ही टूट गई थी। टीचर्स की मोटिवेशन का ही नतीजा था कि वह कबड्डी में लगातर प्रयास करते हुए इंटरनेशनल पैरा कबड्डी प्रतियोगिता तक पहुंच पाया।